उपसंहार

लोकमानव की मौखिक अभिव्यक्ति को लोकसाहित्य संज्ञा से अभिहित किया गया है। मानव को वाणी के वरदान के साथ ही ईश्वर ने ज्ञान के भंडार से मनुष्य को आप्लावित किया, यही ज्ञान की संचित राशि है और ग्रामीण मानव के जीवन का रत्न लोकसाहित्य है। लोकमानव अपने दैनिक क्रिया में घटित सुख-दु:ख की अनुभूतियों को जिसप्रकार प्रकट करता है वही लोकसाहित्य है। वासुदेवशरण अग्रवाल जी ने कहा है कि- "अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्चय प्रजापति है। लोक, लोक की धात्री सर्वभूत माता पृथिवि और लोक का व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नए जीवन का अध्यात्म शस्त्र है।" लोक साहित्य में यथार्थवाद तथा आदर्शवाद का समागम उपलब्ध होता है। लोक साहित्य मनीषियों ने लोकसाहित्य को लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, एवं लोकासुभाषित भागों में विभाजित किया है। लोकगीत सर्वथा चर्चित एवं संपूर्ण विधा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ग्राम गीतों के विषय में लिखा है – "भारतीय जनता का स्वरूप पहचानने के लिए पुराने परिचित ग्राम-गीतों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, केवल पंडितों द्वारा परिवर्तित काव्य का अनुशीलन ही अलम नहीं है। जब-जब शिष्ट काव्य पंडितों द्वारा परिवर्तित काव्य का होगा तब-तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश की सामान्य जनता के बीच स्वछंद बहती हुई प्राकृतिक भावधारा से तत्त्व ग्रहण करने से प्राप्त होगा।" वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार "लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र हैं।" डॉ. कुन्दनलाल उप्रेती ने कहा है कि "लोकसाहित्य का किसी देश-विशेष के जनजीवन के लिए सांस्कृतिक महत्व है। किसी देश का समाज, धर्म, साहित्य, दर्शन, लोकसाहित्य में यथार्थ रूप में सुरक्षित है। इसके अध्ययन से हमें देश-विशेष के राष्ट्रीय जीवन का पूरा चित्र मिलता है।" वासुदेवशरण अग्रवाल का कथन है- "लोकहमारे जीवन का महासमुद्र

है; उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है लोक कृतस्न ज्ञान और सम्पूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है । लोकसाहित्यकारों की लोकसम्पदा के संकलन संघर्ष की कथा कहते हैं

रतीय लोक साहित्य मनीषियों में डॉ. सत्येंद्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, आचार्य रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. कुन्दनलाल उप्रेती, डॉ. श्याम परमार, डॉ. कृष्ण देव उपादध्याय, डॉ. कुलदीप, डॉ. मोहनलाल मधुकर, डॉ. बापूराव देसाई आदि के कठिन परिश्रम एवं साहस के कारण अप्रकाशित साहित्य संकलित हुआ तथा संरक्षित भी जिसके लिए हम इनके आभारी है ।

लोकसाहित्य साहित्यिक साधना की निरंतर बदलती प्रकृति का एक उदाहरण है, जो समय और स्थान की आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित होता है । लोक साहित्य की विशेषता उन लोगों से होती है जिनसे वह संबंधित है इसलिए इसे जन साहित्य कहना अधिक उचित होगा। लोक साहित्य लोगों की इच्छाओं, आकांक्षाओं, रचनात्मकता और सौंदर्य संबंधी आवेगों से उत्पन्न हुआ है और लोगों के जीवन और अनुभवों से निकटता से जुड़ा हुआ है। भारत में अनूठी संस्कृति है। भारत में लोक साहित्य अधिकांश विषयों, कथाओं और मुद्दों की दृष्टि से प्रगतिशील, क्रांतिकारी और समृद्ध रहा है। विश्व के लोक साहित्य. वस्तुतः भारतीय ग्रन्थ विश्व भर के लोक साहित्य के प्रेरणास्रोत हैं।

इस शोध प्रबंध में नारी को केंद्र में रखकर लोकगीत प्रस्तुत किए गए हैं। लोकगीतों के माध्यम से नारी जीवन की समस्याओं को केंद्र में लाने का प्रयास किया है।नारी अपने दु:ख-सुख, हर्ष-विषाद, अत्याचार, शोषण, दिनचर्या, जीवन की चुनौतियाँ आदि के माध्यम से व्यक्त करती है । महिलाएं प्रेम-विवाह, रोजगार, राजनीतिक या धार्मिक कार्यों में वर्जनाएं, अंध-पुत्रमोह, कन्या भ्रुणहत्या, बालिका-विवाह, बालिका ट्राफिकिंग, अवयस्क मातृत्व, गर्भपात की समस्याएं, विवाह में निर्णय न लेने

की स्थितियाँ, कामकाजी महिलाओं पर भेदभाव,, यौन-शोषण, मानसिक उत्पीड़न आदि समस्यओं का उल्लेख लोकागीतों में मिलता है

शोध प्रबंध में ब्रज लोकगीतों का वर्गीकरण कर संस्कार गीत, शादी-ब्याह के गीत, मौसम एवं माह विशेषक गीत, तीज-त्यौहार के गीत, खेलकूद के गीत, शादी-ब्याह के गीत आदि गीतों को उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया हैं। लोकसंगीत का नारी जीवन में अहम भूमिक होती है। नारी को लोकगीतों में साहसी और सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे यह साबित होता है कि वह अपने जीवन में समस्याओं का समानाधिकारी रूप से सामना करती है। सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता लोकगीतों के माध्यम से जिसमें समाज सुधारक गीत समाज में महिलाओं को संघर्ष करते हुए दर्शाते हैं। इस प्रकार लोकगीत नारी के जीवन, संघर्ष, और सशक्तिकरण को प्रस्तुत करते हुए सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन का माध्यम बने। लोक साहित्य लोगों की इच्छाओं, आकांक्षाओं, रचनात्मकता और सौंदर्य संबंधी आवेगों से उत्पन्न होता है और इसलिए यह आमजन समुदाय के जीवन और अनुभवों से बारीकी से जुड़ा हुआ है ।

इस शोध प्रबंध के माध्यम से ब्रज लोकगीतों के संस्कार गीत, तीज-त्यौहार के गीत,शादी-ब्याह के गीत, ऋतु संबंधी गीत, कृषि संबंधित गीत, श्रम गीत,देवी-देवताओं के गीत आदि का संकलन किया गया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक गीतों में समाज सुधारक गीत भी हैं, जिनमें पर्यावरण सुधार और संरक्षण, परिवार नियोजन, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, देश-प्रेम, नारी जागृति, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर संकलित लोकगीतों को इस शोध प्रबंध से प्रकाशित किया जा रहा है।

परिशिष्ट

❖ आधार ग्रंथ सूचि

1. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव — भोजपुरी लोकसाहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, सं 2002 ई.
2. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव — लोक साहित्य की भूमिका; साहित्य भवन प्रा. लि. जीरो रोड, इलाहाबाद, सन् 1998 ई.
3. उप्रेती, कुन्दनलाल — लोकसाहित्य के प्रतिमान; भारत प्रकाशन मंदिर , अलिगढ़ सन् 1971 ई.
4. परमार, श्याम — भारतीय लोकसाहित्य; राजकमल पब्लिकेशन लिमिटेड, बम्बई, 1954
5. मधुकर, सं मोहनलाल — ब्रज लोक वैभव; राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, 118 वसुंधरा कॉलोनी, टोंक रोड,जयपुर
6. मीत्तल, प्रभुदयाल — ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास ; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; सन् 1966
7. सांकृत्यायन, सं. राहुल/ उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव — हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (भाग 16); लेखक- डॉ. सत्येंद्र ब्रज लोक साहित्य; काशी नागरी प्रचारिणी सभा; काशी ; प्र. संवत् 2017 ई.
8. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन ; साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ; संस्करण .ई 1949
9. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज लोकसंस्कृति; ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, सं. 2005 वि.

10. सं. डॉ. सत्येंद्र ब्रज साहित्य, (कन्हैयालाल पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ) अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1.	अग्रवाल, डॉ. कैलाशचंद्र	ब्रज लोकसाहित्य में लोकचेतना और जीवन दर्शन, चिन्मय प्रकाशन, मोतीलाल नेहरू रोड, आगरा, संस्करण प्रथम, सन् 1989 ई.
2.	अली, डॉ. इरशाद	मुस्लिम लोकगीतों का विवेचनात्मक अध्ययन; अनुभव प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. सन् 1985 ई.
3.	अग्रवाल, सं. वासुदेव	साहित्य वाचस्पति सेठ कन्हैयालाल पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ; अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल; मथुरा, सं 2010
4.	उप्रेती, कुन्दनलाल	लोकसाहित्य के प्रतिमान; भारत प्रकाशन मंदिर , अलिगढ़ सन् 1971 ई.
5.	उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव	भोजपुरी लोकसाहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, सं 2002 ई.
6.	उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव	लोक साहित्य की भूमिका; साहित्य भवन प्रा. लि. जीरो रोड, इलाहाबाद, सन् 1998 ई.
7.	उमरे, डॉ. करुणा	स्त्री-विमर्श: साहित्यिक और व्यवहारिक संदर्भ;अमन प्रकाशन, कानपुर सं. प्रथम सन् 2009
8.	डॉ. कुलदीप	लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन; प्रगति प्रकाशन, बैतुल विल्डिंग, आगरा 3 सन् 1972 ई.
9.	के. पी. प्रेमिला	स्त्री अध्ययन की बुनियाद; राजकमल प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2015
10.	चतुर्वेदी, डॉ. शेफाली	ब्रज लोकसाहित्य : नव चिंतन; कल्पना प्रकाशन; नई दिल्ली, वर्ष 2011

11. चारण, डॉ. सोहनदान — राजस्थानी लोक-साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन; राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

12. जैन, शांति — नारी-जीवन; मंत्री श्री जवाहर साहित्य समिति, बीकानेर राजस्थान, सं. दुसरा, वर्ष 1969

13. जोशी, पं. शिवदयाल — लोकगीतों में रस योजना; इंदु प्रकाशन, अचल तालाब, अलीगढ़, सन् 1985 ई.

14. तिवारी, रामचंद्र — हिंदी का गद्य साहित्य;विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश. सं. एकादश (11), 2016 ई.

15. देसाई, डॉ. बापूराव — लोकसाहित्यशास्त्र; विकास प्रकाशन, बर्रा, कानपुर, उत्तरप्रदेश.सं. प्रथम, वर्ष 2004

16. देसाई, डॉ. बापूराव — भारत की २५ बोलियों का सप्रयोग लोकसाहित्य; गरिमा प्रकाशन, कानपुर, उत्तरप्रदेश सं. प्रथम, वर्ष 2013

17. परमार, श्याम — भारतीय लोक साहित्य; राजकमल पब्लिकेशन लिमिटेड, बम्बई, 1954

18. परमार, श्याम — लोकधर्मी नाट्य परम्परा

19. पचौरी, भगवान सहाय — ब्रज साहित्य का मूल्यांकन; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, सन् 1971 ई.

20. प्रसाद, सं. माता — लोकगीतों में वेदना और विद्रोह के स्वर; सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 2007

21. पाण्डेय, मैनेजर — आलोचना की सामाजिकता; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2005 ई.

22. पारीक, सूर्यकिरण — राजस्थान के लोकगीत

23. भाटिया, डॉ. हर्षनंदिनी — ब्रज संस्कृति और साहित्य; ज्ञान गंगा, चावड़ी बाजार, दिल्ली, सं. प्र. सन् 1995 ई.

24. भ्रमर, डॉ. रवींद्र — हिंदी भक्ति साहित्य में लोकतत्व;भारतीय साहित्य मंदिर, शहदरा, दिल्ली, सं. प्रथम सन् 1965 ई.

25. मीत्तल, प्रभुदयाल — ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास ; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; सन् 1966 ई.

26. मनीषा — हम सभ्यऔरतें; सामयिक प्रकाशन, दरियागंज,दिल्ली. सं. प्रथम, सन् 2009

27. वर्मा, डॉ. धीरेंद्र — ब्रजभाषा; हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् 1954 ई.

28. वर्मा, डॉ. विमला / सिंह जितेंद्र — ब्रज की लोककलाएं; संस्कृति विभाग, लखनऊ, उत्तरप्रदेश. वर्ष 1995.

29. वाजपेयी, कृष्णदत्त — ब्रज का इतिहास; अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, सन् 1955 ई.

30. शर्मा, डॉ. मालती — ब्रज के लोक संस्कार गीत; अनुभव प्रकाशन, गाजियाबाद, सं. प्रथम, सन् 2009 ई.

31. शर्मा, डॉ. कृष्णदेव — लोकसाहित्य : समीक्षा; अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, प्रथम संस्करण , सन् 1974 ई.

32. शर्मा, डॉ. हरद्वारीलाल — लोकवार्ता विज्ञान (भाग- एक और भाग- दो); किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, सं. प्रथम, सन् 2006 ई.

33. सांकृत्यायन, सं. राहुल/ उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, लेखक- डॉ. सत्येंद्र — हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (भाग 16); ब्रज लोक साहित्य; काशी नागरी प्रचारिणी सभा; काशी ; प्र. संवत् 2017 ई.

34. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन ; साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ; संस्करण .ई 1949

35. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज लोकसंस्कृति; ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, सं. 2005 वि.

36. डॉ. सत्येंद्र — लोकसाहित्य विज्ञान; शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी (प्रा. लि.), आगरा प्रथम संस्करण, सन् 1962 ई.

37. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज साहित्य का इतिहास; भारती भंडार, लीडर प्रेस इलाहाबाद संवत 2024 वि.

38. सं. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज साहित्य, (कन्हैयालाल पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ) अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा

39. हरि वियोगी — ब्रज माधुरीसार;हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग. सं. तीसरा, सन् 1939 ई.

40. त्रिपाठी, रामनरेश — कविता कौमुदी, (भाग-पाँचवाँ), हिंदी- मंदिर, प्रयाग, सं. पाँचवाँ, 1986 ई.

पत्र- पत्रिकाएँ

1. अग्रवाल, सं. वासुदेवशरण — सम्मेलन पत्रिका (लोकसंस्कृति विशेषांक), 2010
2. अग्रवाल, सं. वासुदेवशरण — आजकल (लोककथा विशेषांक), मई, सन् 1954 ई.
3. अग्रवाल, सं. वासुदेवशरण — वरदा (भारतीय संस्कृति में लोक-तत्त्व), जनवरी, 1958 अंक 1
4. कालिया, सं. रवींद्र — नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली.
5. पचौरी, सं. भगवानसहाय — ब्रज गरिमा, स्वामी प्रकाशन, मथुरा
6. भारद्वाज, सं. डॉ. शशि — भाषा, (लोक- साहित्य विशेषांक) त्रैमासिक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, जुलाई-अगस्त, सन् 2005 ई.
7. दीक्षित, सं. डॉ. उमाशंकर — जमुना-जल (त्रैमासिक ब्रज पत्रिका),मथुरा
8. राय, सं. गुलाब — ब्रज भारती; अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा
9. राव, सं. बालकृष्ण — हिंदुस्तानी शोध पत्रिका; हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद.
10. शास्त्री, सं. धर्मदेव — गवेषणा, (त्रैमासिक) केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

कोश

1. आप्टे, सं. वामन शिवराम	संस्कृत-हिंदी कोश (छात्र संस्करण); नाग प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली सन् 1988 ई.
2. वसु, सं. नगेंद्रनाथ	हिंदी विश्व कोश (भाग-20); बी. आर. पब्लिशिंग कोरपोरेशन, दिल्ली, सं. प्रथम सन् 1919.
3. वर्मा, फूलसहाय	हिंदी विश्वकोश(खण्ड-दो)
4. वर्मा, धीरेंद्र	हिंदी साहित्यकोश ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, सं. 2020 वि.
6. सं. डॉ. नगेंद्र	मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य खण्ड) राजकमल प्रकाशन, दिल्ल, सन् 1958 ई.
6. शुक्ल, सं. आचार्य रामचंद्र	हिंदी शब्दसागर (भाग-8) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी सन् 1958 ई.